MSB
Class X
Hindi

Time : 3 hrs **Total Marks : 80**

सूचनाएँ:

1) सूचना के अनुसार गद्य, पद्य तथा पूरक पठन की आकलन कृतियों में आवश्यकता के अनुसार आकृतियों में ही उत्तर लिखना अपेक्षित है।
2) सभी आकृतियों के लिए पेन का ही प्रयोग करें।
3) रचना विभाग तथा व्याकरण विभाग में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के लिए आकृतियों की आवश्यकता नहीं है।
4) शुद्ध, स्पष्ट एवं सुवाच्य लेखन अपेक्षित है।

विभाग 1 : गद्य [20]

प्रश्न 1.

(अ) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए। [8]

1) आकृति पूर्ण कीजिए। [2]

1. दुकानदार इनसे कुछ नहीं पूछता - कुर्सी-मेज
2. जो आप इतनी देर से यह कर रहे हैं - नाप-तौल
3. क्या हम लड़कियों की यह नहीं होती - बेइज्जती
4. बाबू रामस्वरूप आपने मेरे साथ यह किया - दगा

रामस्वरूप : जवाब दो, उमा। (गोपाल से) हँ-हँ, जरा शरमाती है। इनाम तो इसने-

गो. प्रसाद : (जरा रुखी आवाज में) जरा इसे भी तो मुँह खोलना चाहिए।

रामस्वरूप : उमा, देखो, आप क्या कह रहे हैं। जवाब दो न।

उमा : (हल्की लेकिन मजबूत आवाज में) क्या जवाब दूँ बाबू जी! जब कुर्सी-मेज बिकती है तब दुकानदार कुर्सी-मेज से कुछ नहीं पूछता सिर्फ खरीददार को दिखला देता है। पसंद आ गई तो अच्छा है, वरना-

रामस्वरूप : (चौंककर खड़े हो जाते हैं।) उमा, उमा!

उमा : अब मुझे कह लेने दीजिए बाबू जी।

गो. प्रसाद : (ताव में आकर) बाबू रामस्वरूप, आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया था?

उमा : (तेज आवाज में) जी हाँ, और हमारी बेइज्जती नहीं होती जो आप इतनी देर से नाप-तौल कर रहे हैं?

शंकर : बाबू जी, चलिए।

गो. प्रसाद : क्या तुम कॉलेज में पढ़ी हो? (रामस्वरूप चुप)

उमा : जी हाँ, मैं कॉलेज में पढ़ी हूँ। मैंने बी.ए. पास किया है। कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की और न आपके पुत्र की तरह लड़कियों के होस्टल में ताक-झाँककर कायरता दिखाई है। मुझे अपनी इज्जत, अपने मान का खयाल तो है लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह नौकरानी के पैरों में पड़कर अपना मुँह छिपाकर भागे थे।

रामस्वरूप : उमा, उमा!

गो. प्रसाद : (खड़े होकर गुस्से में) बस हो चुका। बाबू रामस्वरूप आपने मेरे साथ दगा किया। आपकी लडकी बी.ए.पास है और आपने मुझसे कहा था कि सिर्फ मैट्रिक तक पढ़ी है। (दरवाजे की ओर बढ़ते हैं।)

उमा : जी हाँ, जाइए, जरुर चले जाइए! लेकिन घर जाकर जरा यह पता लगाइएगा कि आपके लाड़ले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं-

याने बैकबोन-[बाबू गोपाल प्रसाद के चेहरे पर बेबसी का गुस्सा है और उनके लड़के के रुलासापन। दोनों बाहर चले जाते हैं। उमा सहसा चुप हो जाती है।]

2) कारण लिखिए: [2]

(1) शंकर नौकरानी के पैरों में पड़कर मुँह छिपाकर भागा।

उत्तर : शंकर लड़कियों के होस्टल में ताक-झाँक करता पकड़ा गया था।

(2) उमा को गुस्सा आया-

उत्तर : गोपाल प्रसाद उमा के चश्मे, उसके गाने-बजाने, पेंटिंग, सिलाई और उसकी पढ़ाई आदि के बारे में एक के बाद एक प्रश्न करते जा रहे थे।

(3) (i) कृदंत बनाइए: [1]

- पढ़ना - पढ़ाकू
- समझना - समझदार

(ii) परिच्छेद में प्रयुक्त प्रत्ययययुक्त शब्दों से मूल शब्द और प्रत्यय अलग करके लिखिए: [1]

- दुकानदार - दुकान + दार
- कायरत - कायर + ता

(4) उमा को गोपाल प्रसाद की किन बातों पर गुस्सा आया? क्या वह उचित था? इस विषय पर अपने विचार लिखिए। [2]

उत्तर : गोपाल प्रसाद अपने बेटे के विवाह के लिए उमा को देखने आते हैं वे स्वयं एक वकील हैं परंतु इसके बावजूद अपनी पुत्रवधू केवल मैट्रिक पास ही चाहते हैं। उनके अनुसार स्त्रियों का काम

केवल घर सँभालना ही होता है। इसके अलावा वे उमा से कभी गाने-बजाने के बारे में कहते हैं तो कभी सिलाई-पेंटिंग के बारे पूछते हैं। इन सब बातों को सुनकर उमा को गुस्सा आ जाता है क्योंकि वह कोई भेड़-बकरी नहीं है कि लोग उसे देख-भाल कर खरीद करें। विवाह के लिए उसकी पसंद-नापसंद भी मायने रखती है। अत: उमा का गुस्सा होना बिल्कुल सही था।

(आ) परिच्छेद पढ़कर सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए। [8]

1) आकृति पूर्ण कीजिए: (2)

जिनिया के पौधे के साथ हुई घटनाएँ

- पौधा रास्ते के किनारे था, लोग उसकी कली तोड़ लेते थे
- दो-एक महीने खूब फूल देकर पौधा सूख गया
- पौधे ने वहाँ खूब सुंदर-सुंदर फूल दिए

प्रिय सरोज,

तुम्हारा 16 से 18 तक लिखा हुआ पत्र आज अभी मिला। इस महीने में मैंने तारीखों को पत्र लिखे हैं- तारीख 1, 9, 15 और चौथा आज लिख रहा हूँ। अब तुमको हर सप्ताह मैं लिखूँगा ही। तुम्हारी तबीयत कमजोर है तब तक चिरंजीव रैहाना मुझे पत्र लिखेगी तो चलेगा। मुझे हर सप्ताह एक पत्र मिलना ही चाहिए।

पूज्य बापू जी चाहते हैं तो हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए मुझे अपनी सारी शक्ति उर्दू सीखने के पीछे खर्च करनी चाहिए। तुमको मैंने एक संदेश भेजा था कि तुम उर्दू लिखना सीखो। लेकिन अब तो मेरा एक ही संदेश है- पूरा आराम लेकर पूरी तरह ठीक हो जाओ।

तारों के नक्शे बनाने के लिए कंपास बॉक्स भी मँगाकर रखा है। लेकिन अब तक कुछ हो नहीं पाया है।

मैंने अपने फूल के गमले अपने पास से निकाल दिए हैं। सादे क्रोटन को ही रहने दिया है।

सबको काका का सप्रेम शुभाशीष

2) कारण लिखिए: [2]

i) काका जी ने कंपास बॉक्स मँगाकर रखा-

उत्तर : काका जी को तारों के नक्शे बनाने थे, इसलिए उन्होंने कंपास बॉक्स मँगा कर रखा है।

ii) लेखक ने फूल के गमले अपने पास से निकल दिए-

उत्तर : काका जी के पास वाले गमलों में लगे फूलों के पौधे सूख गए थे, इसलिए काका जी ने फूल के गमले अपने पास से निकाल दिए।

3) i) उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाइए: [1]

- गति - प्र + गति = प्रगति
- शासन - अनु + शासन = अनुशासन

ii) निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए: [1]

- नौकर - नौकर + ई = नौकरी
- चतुर - चतुर + आई = चतुराई

4) 'पत्र लिखने का सिलसिला सदैव जारी रहना चाहिए' इस संदर्भ में अपने विचार लिखिए। [2]

पत्र लेखन एक ऐसी कला है जिसमें हम अपनी मन की भावनाओं को शब्दों के जरिए पहुँचाते हैं। कभी-कभी ऐसा भी होता है जब हम अपने मन में उठने वाले विचार और भावनाएँ व्यक्ति के सामने प्रकट नहीं कर पाते, उन्हीं भावनाओं और विचारों को हम पत्र के माध्यम से आसानी से व्यक्त कर सकते हैं। पत्रों के माध्यम से शब्दों द्वारा व्यक्त की गई भावना हमेशा हमारे पास रह जाती है। पत्र दिलों को जोड़ने का, सूचनाओं के आदान-प्रदान का, समाज में जागृति फैलाने, अपनी बात सब तक पहुँचाने का सबसे अच्छा माध्यम है। इन पत्रों को हम जब चाहे, जितनी बार चाहे उतनी बार पढ़ सकते हैं और आनंद उठा सकते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के दौरान तो ये पत्र आजादी के लड़ाई का एक हथियार रहे हैं। पत्रों के जरिए ही स्वतंत्रता सेनानी सूचनाओं का आदान-प्रदान करते थे। पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा अपनी बेटी इंदिरा को लिखे गए पत्र तो अपने आप में अनूठे थे। 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' शीर्षक से उन्होंने न जाने कितने पत्र अपनी बेटी इंदिरा को लिखें। इन पत्रों में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी बेटी को समझाने की कोशिश की है कि यह धरती कैसे बनी, सौरमंडल क्या है, इंसान और पशुओं का जीवन कैसे शुरू हुआ और दुनिया भर में सभ्यताएँ कैसे अस्तित्व में आईं और विकसित हुईं।

इन पत्रों में जवाहरलाल नेहरू ने नन्हीं इंदिरा को ऐतिहासिक, पौराणिक, भाषा, विज्ञान, देश-विदेश आदि की न जाने कितनी की गूढ़ बातें सरल ढंग से समझा दी। आज भले ही दूरसंचार क्रांति के कारण मोबाइल जैसे सुलभ-साधन आ गए हों पर फिर भी पत्रों का महत्त्व कम नहीं हुआ है। आज भी घनिष्ठ संबंधों को संजोने के लिए सरकारी और व्यावसायिक कार्यों के लिए पत्रों की ही आवश्यकता होती है।

अत: पत्र अभिव्यक्ति का एक सशक्त और सरल माध्यम होने के कारण इसका सिलसिला चलता ही रहना चाहिए।

(इ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए: [4]

मनुष्य सामाजिक प्राणी है क्योंकि समाज के बिना उसका जीवन अधूरा है। समाज में रहते हुए उसे अपने सुख-दुख को कहने-सुनने तथा विचारों का आदान-प्रदान करने एवं कार्यों में सहयोग लेने के लिए दूसरों की आवश्यकता पड़ती है जिससे वह दिल खोलकर अपनी सब बातें कर सके। ऐसा व्यक्ति ही मित्र कहलाता है। मित्र का चुनाव सोच-समझकर करना चाहिए। कुछ लोग किसी की बाहरी चमक-दमक, बोल-चाल तथा आर्थिक स्थिति को देखकर उससे मित्रता कर लेते हैं। इस प्रकार की मित्रता अधिक दिनों तक नहीं चलती। सच्चे मित्र का चयन करने के लिए उसके व्यवहार, आचरण तथा चरित्र पर ध्यान देना आवश्यक होता है। सच्चा मित्र विश्वासपात्र, दूसरों की भावनाओं को समझने वाला, विनम्र, सदाचारी तथा चरित्रवान होता है।

1) आकृति पूर्ण कीजिए: [2]

i)

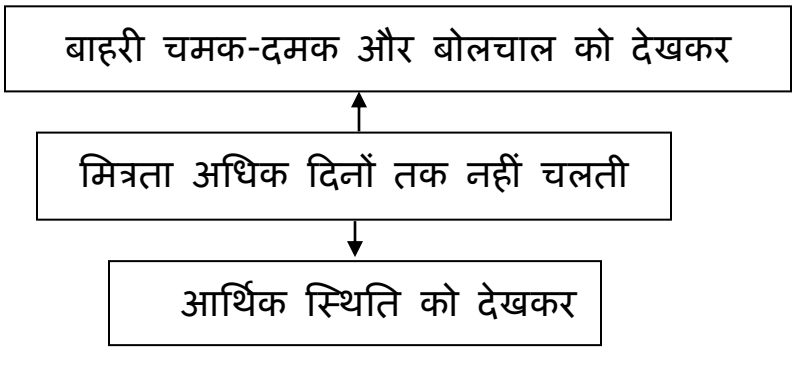

ii)

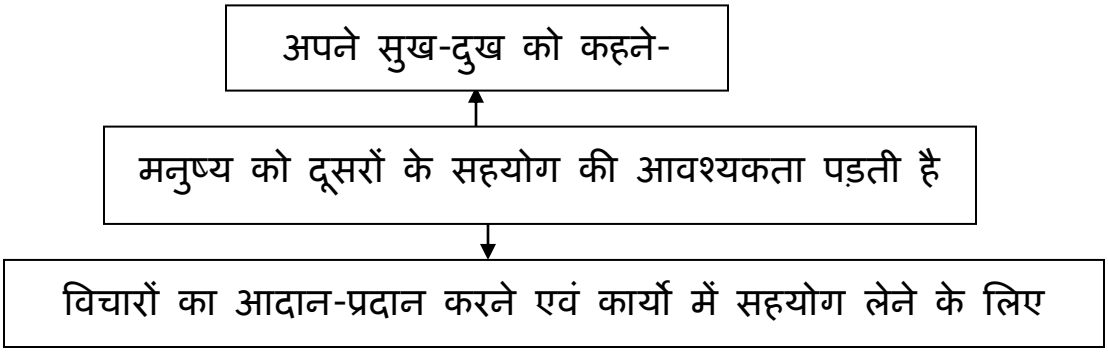

2) मनुष्य के जीवन में सत्संगति के प्रभाव पर अपने विचार प्रकट करें। [2]

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने के कारण वह अच्छे-बुरे सभी प्रकार के लोगों के संपर्क में आता है। अच्छे लोगों के साथ उठने-बैठने से मनुष्य में अच्छे गुण तथा बुरे लोगों के साथ रहने से बुरे गुण आते हैं। इस प्रकार मनुष्य पर संगति का प्रभाव पड़ता है। शराब बेचने वाले के कलश में यदि दूध भी हो तो लोग उसे शराब ही समझते हैं। मनुष्य जैसे लोगों के साथ बैठता है, वैसा ही प्रभाव ग्रहण करता है। दुर्जन और साधु के घर पले तोते संगति के महत्त्व को स्पष्ट कर देते हैं। साधु के घर पला तोता राम-राम तथा भजन बोलता है, जबकि दुर्जन के घर पला तोता सदा गालियाँ ही देता रहता था। सत्संग के बिना मनुष्य को विवेक प्राप्त नहीं होता। जिस मनुष्य में विवेक नहीं, उसमें और पशु में कोई अंतर दिखाई नहीं देता। अतः मनुष्य को कुसंगति से दूर रहने तथा सत्संगति प्राप्त करते रहना चाहिए।

विभाग 2 : पद्य [12]

प्रश्न 2.

(अ) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए: [6]

1) संजाल पूर्ण कीजिए: [2]

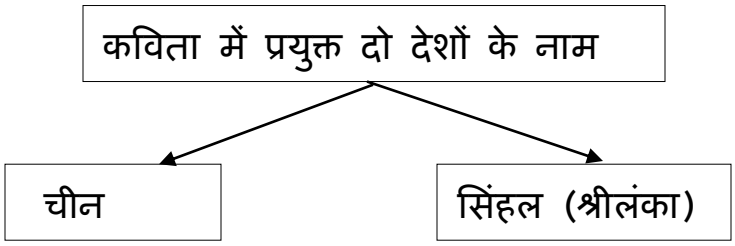

विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम
भिक्षु होकर रहते सम्राट, दया दिखलाते घर-घर घूम।
'गोरी' को दिया दया का दान, चीन को मिली धर्म की दृष्टि
मिला था स्वर्ण भूमि को रत्न, शील की सिंहल को भी सृष्टि।

किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यहीं
हमारी जन्मभूमि थी यहीं, कहीं से हम आए थे नहीं।....

2) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए: [2]

(i) भारत में केवल <u>लोहे</u> की ही विजय नहीं रही। (चाँदी/लोहे/सोने)

(ii) यहाँ <u>सम्राट</u> भिक्षु की तरह रहते थे। (लोग/लड़के/सम्राट)

(iii) हमसे चीन को <u>धर्म</u> की दृष्टि मिली। (धर्म/कर्म/धन)

(iv) हमारा देश सदा प्रकृति का <u>पालना</u> रहा। (खिलौना/आँगन/पालना)

3) उपर्युक्त पद्यांश की अपनी पसंदीदा किन्ही दो पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।[2]

उत्तर : पसंदीदा पंक्तियाँ-

किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यहीं
हमारी जन्मभूमि थी यहीं, कहीं से हम आये नहीं।

भावार्थ - भारतवासियों से कभी भी किसी की संपत्ति या राज्य छीनने का प्रयास नहीं किया। प्रकृति की सब अनमोल देने हमें मिली हुई हैं। भारत सदा से हमारी जन्मभूमि रही है। हम इसी देश की संतानें हैं कहीं और से आकर इस देश में बसे नहीं हैं।

(आ) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए: [6]

1) कृति पूर्ण कीजिए: [2]

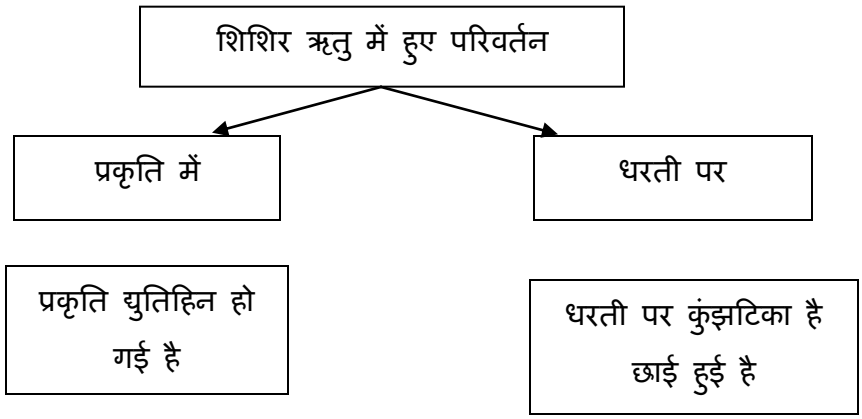

बीत गया हेमंत भ्रात, शिशिर ऋतु आई!
प्रकृति हुई द्युतिहिन, अवनि में कुंझटिका है छाई।
पड़ता खूब तुषार पद्मदल तालों में बिलखाते,
अन्यायी नृप के दंडों से यथा लोग दुख पाते।
निशा काल में लोग घरों में निज-निज जा सोते हैं,
बाहर श्वान स्यार चिल्लाकर बार-बार रोते हैं।

2) एक शब्द में उत्तर कीजिए: [2]

(i) पद्यांश में आए एक फूल का नाम - पद्म (कमल)।

(ii) श्वेत कणोंके रूप में पृथ्वी पर गिरने वाली हवा में मिली भाप - तुषार (बर्फ)।

(iii) लंबे-चौड़े प्राकृतिक गड्ढे के लिए प्रयुक्त शब्द जिसमें बरसाती पानी जमा होता है - ताल।

(iv) शिशिर ऋतु से पहले आने वाली ऋतु - हेमंत ऋतु।

3) प्रस्तुत पद्यांश की किन्हीं दो पंक्तियों का भावार्थ लिखिए। [2]

उत्तर : पंक्तियाँ - पड़ता खूब तुषार पद्मदल तालों में बिलखाते,
अन्यायी नृप के दंडों से यथा लोग दुख पाते।

भावार्थ - ठंड के कारण खूब बर्फ गिर रही है। इससे तालाबों में खिले कमल के फूलों को बहुत अधिक कष्ट हो रहा है। कवि कहते हैं कि यह कष्ट कुछ उसी तरह का है, जैसे किसी निर्दयी और अन्यायी राजा के तरह-तरह के दंडों से प्रजा दुखी होती है।

विभाग : पूरक पठन [8]

प्रश्न 3

(अ) परिच्छेद पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए: [4]

1) संजाल पूर्ण कीजिए: [2]

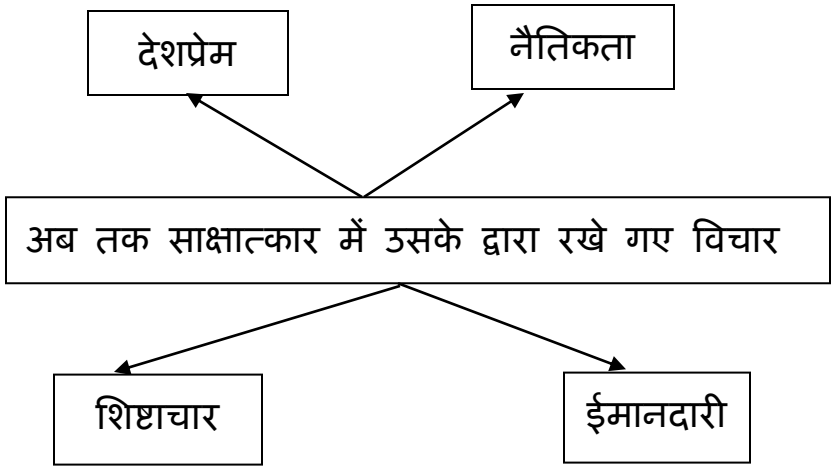

अब तक वह कितने ही स्थानों पर नौकरी के लिए आवेदन कर चुका था। साक्षात्कार दे चुका था। उसके प्रमाणपत्रों की फाइल भी उसे सफलता दिलाने में नाकामयाब रही थी। हर जगह भ्रष्टाचार, रिश्वत का बोलबाला होने के कारण, योग्यता के बावजूद उसका चयन नहीं हो पाता था। हर ओर से अब वह निराश हो चुका था। भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था को कोसने के अलावा उसके वश में और कुछ तो था नहीं।

आज फिर उसे साक्षात्कार के लिए जाना है। अब तक देशप्रेम, नैतिकता, शिष्टाचार, ईमानदारी पर अपने तर्कपूर्ण विचार बड़े विश्वास से रखता आया था लेकिन इसके बावजूद उसके हिस्से में सिर्फ असफलता ही आई थी। साक्षात्कार के लिए उपस्थित प्रतिनिधि मंडल में से एक अधिकारी ने पूछा - "भ्रष्टाचार के बारे में आपकी क्या राय है?"

"भ्रष्टाचार एक ऐसा कीड़ा है जो देश को घुन की तरह खा रहा है। इसने सारी सामाजिक व्यवस्था को चिंताजनक स्थिति में पहुँचा दिया है। सच कहा जाए तो यह देश के लिए कलंक है... ।" अधिकारीयों के चेहरे पर

हलकी-सी मुसकान और उत्सुकता छा गई। उसके तर्क में उन्हें रूचि महसूस होने लगी। दूसरे अधिकारी ने प्रश्न किया - "रिश्वत को आप क्या मानते हैं?"

"यह भ्रष्टाचार की बहन है जैसे विशेष अवसरों पर हम अपने प्रियजनों, परिचितों, मित्रों को उपहार देते हैं। इसका स्वरुप भी कुछ-कुछ वैसा ही है लेकिन उपहार देकर हम केवल खुशियों या कर्तव्यों का आदान-प्रदान करते हैं। इससे अधिक कुछ नहीं जबकि रिश्वत देने से रुके हुए कार्य, दबी हुई फाइलें, टलती हुई पदोन्नति, रोकी गई नौकरी आदि में इसके कारण सफलता हासिल की जा सकती है। तब भी यह समाज के माथे पर कलंक है, इसका समर्थन कतई नहीं किया जा सकता, ऐसी मेरी धारणा है।" कहकर वह तेजी से बाहर निकल आया। जानता था कि यहाँ भी चयन नहीं होगा।

पर भीतर बैठे अधिकारीयों ने ... गंभीरता से विचार-विमर्श करने के बाद युवक के सही उत्तर की दाद देते हुए उसका चयन कर लिया। आज वह समझा कि 'सत्य कुछ समय के लिए निराश हो सकता है, परास्त नहीं।'

2) कारण लिखिए : [2]

(i) युवक को पहले नौकरी न मिल सकी .....

उत्तर : युवक को पहले नौकरी न मिल सकी, क्योंकि हर जगह भ्रष्टाचार, रिश्वत का बोलबाला था।

(ii) आखिरकार अधिकारीयों द्वारा युवक का चयन कर लिया गया.....

उत्तर : आखिरकार अधिकारीयों द्वारा युवक का चयन कर लिया गया, क्योंकि भीतर बैठे अधिकारीयों ने गंभीरता से विचार विमर्श करने के बाद युवक के सही उत्तर की दाद दी थी।

(आ) परिच्छेद पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए: [4]

1) आकृति पूर्ण कीजिए। [2]

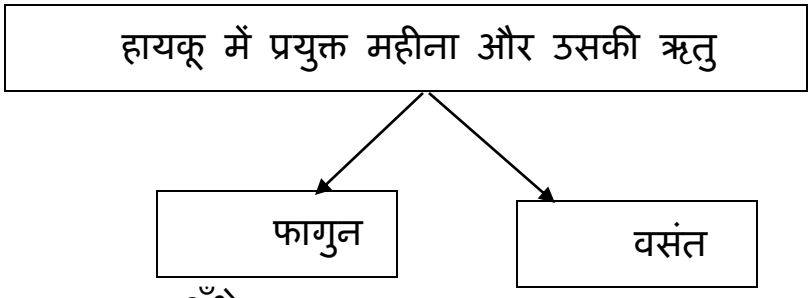

घना अँधेरा

चमकता प्रकाश

और अधिक।

करते जाओ

पाने की मत सोचो

जीवन सारा।

जीवन नैया मँझधार में डोले,

सँभाले कौन?

रंग-बिरंगे

रंग-संग लेकर

काँटों के बीच

खिलखिलाता

देता प्रेरणा

भीतरी कुंठा

आँखों के द्वार से आई बाहर

2) 'बसंत ऋतु' इस विषय पर लिखिए: [2]

उत्तर : वसंत ऋतू भारत की 6 ऋतुओं में से एक ऋतु है, जो फरवरी मार्च और अप्रैल के मध्य में अपना सौंदर्य बिखेरती है। अन्य देशों में यह अलग समयों पर हो सकती है। इस ऋतु के आने पर सर्दी कम हो

जाती है। मौसम सुहावना हो जाता है। इस समय पंचतत्व अपना प्रकोप छोड़कर सुहावने रूप में प्रकट होते हैं। पंचतत्व जल, वायु, धरती, आकाश और अग्नि सभी अपना मोहक रूप दिखाते हैं। पेड़ों में नए पत्ते आने लगते हैं। आम बौरों से लद जाते हैं और खेत सरसों के फूलों से भरे पीले दिखाई देते हैं। सरसों के पीले फूल ऋतुराज के आगमन की घोषणा करते हैं। खेतों में फूली हुई सरसों, पवन के झोंकों से हिलती, ऐसी दिखाई देती है, मानो, सामने सोने का सागर लहरा रहा हो। कोयल पंचम स्वर में गाती है और सभी को कुहू-कुहू की आवाज़ से मंत्रमुग्ध करती है। खेतों में नई फसलें पक जाती हैं। शीशम के पेड़ हरे रंग की रेशम सी कोमल पत्तियों से ढँक जाते हैं।

विभाग 4 : व्याकरण [14]

प्रश्न 4. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

1. अधोरेखांकित शब्द का शब्द भेद लिखिए: [1]
   - <u>उसकी</u> मौसी शिक्षिका हैं।

     उत्तर : सर्वनाम
2. निम्नलिखित अव्यय शब्दों में से किसी एक शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए। [1]
   - तेज - घोडा तेज दौड़ता है।
   - हाय!- हाय! अब मैं क्या करूँ।
3. निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द का संधि विच्छेद करें। [1]
   - संतोष - सम् + तोष
   - देवेंद्र - देव + इंद्र

4. निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य के सहायक क्रिया को पहचानिए और उसका मूल रूप भी लिखें। [1]

- उसे शेर ने मार दिया।

  उत्तर : दिया-देना

- कल से ऑफिस जल्दी जाना पड़ेगा।

  उत्तर : पड़ेगा-पड़ना

5. निम्नलिखित प्रेरणार्थक क्रियाओं में से किन्हीं एक के प्रथम और द्वितीय रूप लिखें। [1]

मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
छोड़ना	छुड़ाना	छुड़वाना
सुखना	सुखाना	सुखवाना

6. मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में उचित प्रयोग कीजिए। [1]

- फूला न समाना

  उत्तर : फूला न समाना - अत्याधिक प्रसन्न होना

  व्यापार में बहुत बड़ा लाभ होने से सेठ फूले नहीं समा रहे थे।

7. निम्नलिखित वाक्यों में कारक पहचानकर उसका भेद भी लिखें। [1]

- मोहित ने पानी पीया।

  उत्तर : ने - कर्ता कारक

- माताजी बच्चे को समझती है।

  उत्तर : को - करण कारक

8. निम्नलिखित वाक्य में उचित विरामचिह्न का प्रयोग करें। [1]

- खिलाड़ी की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा एक दिन तुम देश का नाम रोशन करोगे

  उत्तर : खिलाड़ी की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा, "एक दिन तुम देश का नाम रोशन करोगे।"

9. निम्नलिखित वाक्यों में किन्हीं दो के काल परिवर्तन कीजिए। [2]

- मेरे पास बहुत पत्र आते हैं। (अपूर्ण वर्तमानकाल)

  उत्तर : मेरे पास बहुत पत्र आ रहे हैं।

- अमर कानपूर जाएगा। (सामान्य वर्तमानकाल)

  उत्तर : अमर कानपूर जाता है।

- गौरव पुस्तक बेचता है। (सामान्य भविष्यत् काल)

  उत्तर : गौरव पुस्तक बेचेगा।

10. रचना के आधार पर वाक्य का भेद बताएँ। [1]

- चौकीदार को जैसा कहा गया था, उसने वैसा ही किया।

  उत्तर : मिश्र वाक्य

11. अर्थ के आधार पर वाक्य परिवर्तन कीजिए [1]

- मेरे पिताजी सरकारी कर्मचारी थे। (निषेध वाचक वाक्य)

  उत्तर : मेरे पिताजी सरकारी कर्मचारी नहीं थे।

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए। [2]

- धूल खोजने पे भी कहीं नहीं मिलता है।

  उत्तर : धूल खोजने <u>पर</u> भी कहीं नहीं <u>मिलती</u> है।

- बिजली आकाश में चमकी रहा है।

  उत्तर : बिजली आकाश में <u>चमक रही है</u>।

विभाग 5 : रचना विभाग [26]

सूचना : आवश्यकतानुसार परिच्छेद में लेखन अपेक्षित है।

प्रश्न 5.

(1) सरला भवन, रानडे रोड, पुणे से अपने प्रतीक/प्रतीक्षा इनामदार, अपने मित्र/सहेली अनिल/अनीता लोखंडे, वैशाली नगर, नागपुर को वक्तृत्व प्रतियोगिता में प्रथम स्थान आने पर भेजे गए बधाई पत्र के लिए धन्यवाद देते हुए पत्र लिखता/लिखती है।

दिनाँक: 23/5/xx

प्रिय अनीता,

मधुर स्मृति।

कल ही डाक से तुम्हारा बधाई पत्र मिला। बधाई पत्र पढ़कर मन अत्यंत प्रसन्न हुआ। तुम तो जानती ही हो मैं अभिव्यक्ति में कितनी कमजोर थी। ये तो तुम्हारे निरंतर प्रोत्साहन से मैं इस काबिल बनी हूँ। बचपन से ही तुम मुझे इस विषय पर हमेशा से प्रोत्साहित करती रही हो। इसी कारण आज मैं इस इनाम की हकदार बनी हूँ। अपनी इस उपलब्धि के लिए मैं तुम्हारी तहे दिल से आभारी हूँ।

शेष मिलने पर।

तुम्हारी सहेली,

प्रतीक्षा इनामदार

सरला भवन

रानडे रोड

पुणे

इ-मेल आईडी: pqr@abc.com

टिकट

प्रति,

अनीता लोखंडे

वैशाली नगर

नागपुर

प्रेषिका,

प्रतीक्षा इनामदार

सरला भवन

रानडे रोड

पुणे

इ-मेल आईडी: pqr@abc.com

दिनाँक: 23/5/xx

अथवा

राकेश /रमा मिश्र, सी-304 सेक्टर 8, नोएडा से, संपादक दैनिक जागरण, नई दिल्ली को अपनी कविता अखबार में छपवाने के लिए पत्र लिखता/लिखती है।

दिनाँक: 1 फरवरी, 20XX

सेवा में

संपादक

दैनिक जागरण

नई दिल्ली

विषय : अपनी कविता छपवाने हेतु आग्रह पत्र।

महोदय

मैं आपके पत्र का नियमित पाठक हूँ। समाचार पत्र के रविवारीय अंक को तो मैं विशेष रूप से संभाल कर रखता हूँ। आपके रविवारीय संस्करण के 'बाल मन' पृष्ठ पर मैं भी अपनी कविता छपवाने का इच्छुक हूँ। अतः मैं आपको एक

छोटी सी कविता भेज रहा हूँ। आशा है कि आप मेरी इस कविता को अपने पत्र में स्थान देगें।

धन्यवाद

भवदीय

राकेश मिश्र

सी-304 सेक्टर 8

नोएडा

ई-मेल आईडी: pqr@abc.com

टिकट

प्रति,

संपादक,

दैनिक जागरण,

नई दिल्ली।

प्रेषक,

राकेश मिश्र

सी-304 सेक्टर 8

नोएडा

ई-मेल आईडी: pqr@abc.com

दिनाँक: 1 फरवरी, 20XX

(2) निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर चार ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों: [4]

वर्षा सभी प्राणियों के लिए जीवन का आधार है क्योंकि प्रकृति में रहनेवाला हर एक प्राणी वर्षा पर ही निर्भर होकर जीता है। जल में रहनेवाले, भूमि पर रहनेवाले, आकाश में उड़नेवाले सभी प्राणियों के लिए वर्षा ही जीवन का

आधार है। पानी के बिना पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, मानव, जलचर कोई प्राणी जीवित नहीं रह सकते। पानी वर्षा से ही आता है। मानव को हर एक काम के लिए पानी की अत्यंत आवश्यकता है। अन्य प्राणी भी पानी के बिना जीवित नहीं रह सकते। फसलों के लिए भी पानी की आवश्यकता है। पानी के बिना फ़सल सूख जाती हैं।

इनसे हम कह सकते हैं कि वर्षा सभी प्राणियों के लिए जीवन का आधार है।

1. जीवन का आधार क्या है?
2. पानी के बिना कौन जीवित नहीं रह सकते?
3. फसलों का पानी के बिना क्या परिणाम होता है?
4. पानी की प्राप्ति का मुख्य स्रोत क्या है?

(3) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर लगभग 70-80 शब्दों में कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक और सीख भी दीजिए: [5]

चार चोर-----धन चुराना------बँटवारे के लिए जंगल में जाना-----भूख लगना----दोनों का मिठाई लाने नगर में जाना-----मन में पाप-----मिठाई में जहर मिलाना----जंगल के दोनों चोरों की भी नीयत बिगड़ना------हाथ-मुँह धोने के बहाने कुएँ पर ले जाना------कुएँ में धकेलना-----शेष दोनों का मिठाई खाना-- परिणाम।

लालचा बुरी बला

एक बार चार चोर मिलकर अमीर सेठ के घर पर चोरी करते हैं। उन्हें वहाँ से बहुत सा धन, हीरे, सोने के हार, कंगन बहुत कुछ मिलता है। वह बहुत खुश हो जाते हैं। वे वहाँ से भागकर जंगल की ओर जाते हैं।

जंगल में चारों ने आराम किया। भूख लगने पर दो चोर जंगल से गाँव में मिठाई खरीदने के लिए जाते हैं। रास्ते में उनकी नीयत खराब होने लगती है। दोनों ने अपने साथियों को चोरी का माल पाने के लिए जहर वाली मिठाई खिलाने का निश्चय किया।

उधर दूसरे दोनों ने भी उन्हें पानी में धक्का देकर अपने साथियों को मारने की योजना बनाई।

दोनों ने मिलकर अपने साथियों को जहर वाली मिठाई खिला दी। सब पानी पीने गए और दूसरे दोनों ने उन्हें पानी में गिरा दिया फिर अंत में बचे हुए दोनों जहर से तड़प कर मर गए।

सीख : 'जैसा करोगे, वैसा पाओगे'।

अथवा

वृत्तांत लेखन

साईं नगर रहिवासी संघ द्वारा कोंकण फूड फेस्टिवल के आयोजन पर लगभग 70-80 शब्दों में वृत्तांत लेखन कीजिए। [वृत्तांत लेखन में स्थान,समय घटना का उल्लेख आवश्यक है।]

कोंकण फूड फेस्टिवल

साईं नगर रहिवासी संघ द्वारा कोंकण फूड फेस्टिवल का आयोजन किया गया था। इस बार क्रिसमस की छुट्टियों को ध्यान में रखते हुए संघ द्वारा नागरिकों और बच्चों के लिए कोंकण फूड फेस्टिवल का आयोजन 25 दिसंबर से 31 दिसंबर तक सुबह 11 बजे से शाम को दस बजे तक किया गया था। फेस्टिवल में कोंकण भाग से संबंधित सभी तरह के खान-पान का आयोजन किया गया था। फूड फेस्टिवल के साथ ही उस भाग से जुड़ी अन्य कई बातों की जानकारी देने के लिए कोंकण निवासी श्रीमान शांताराम नाईकजी को भी बुलाया गया था। जिन्होंने अपने वक्तव्य में कोंकण खानपान और रहन-सहन से जुड़ी कई रोचक जानकारी नागरिकों के साथ साझा की। फूड फेस्टिवल के मुख्य आकर्षण का केंद्र वहाँ के मांसाहारी भोजन रहे।

(4) निम्नलिखित जानकारियों के आधार पर विज्ञापन का प्रारूप 50-60 शब्दों में तैयार कीजिए।

चमकी फिनाइल

चमकी फिनाइल	विशेषता	संपर्क

[5]

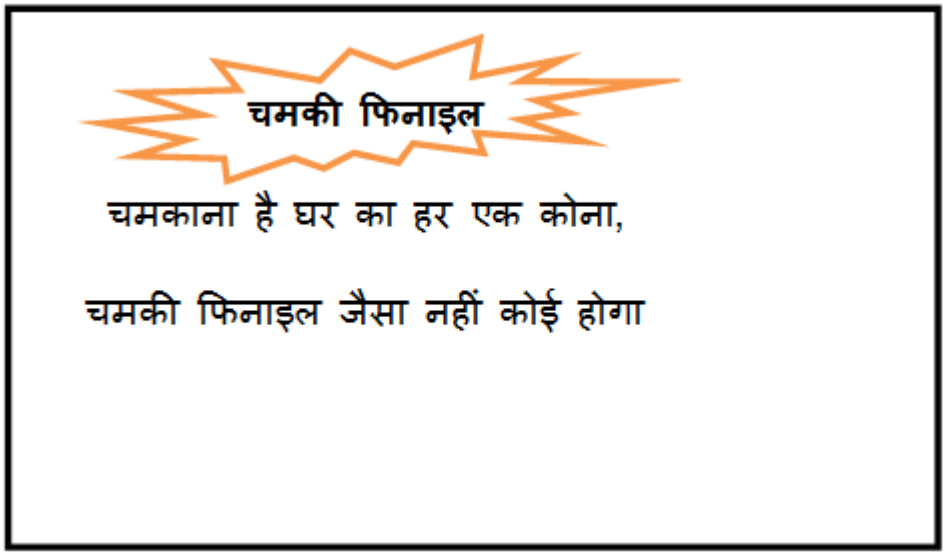

(5) किसी एक विषय पर लगभग 80-100 शब्दों में निबंध लिखिए।

जल है तो कल है [7]

जल जीवन का सबसे आवश्यक घटक है और जीविका के लिए महत्त्वपूर्ण है। यह समुद्र, नदी, तालाब, पोखर, कुआँ, नहर इत्यादि में पाया जाता है। जल मनुष्य की बहुत बड़ी आवश्यकता है, इसके बिना हमारे जीवन की कल्पना करना कठिन है। मानव शरीर में दो तिहाई मात्रा पानी की है। इससे स्पष्ट है कि जल का हमारे जीवन में कितना महत्त्व है। पृथ्वी के हर जीव के लिए जल की बहुत आवश्यकता होती है।

हमारे जिंदगी में हम पानी का इतना इस्तेमाल करते है कि हम अक्सर उसका महत्त्व भूल जाते हैं। कही नल बंद नहीं करते है तो कही और पानी को फ़ेंक देते हैं। परन्तु यह साधारण दिखने वाली चीज़ असल में सबसे महत्त्वपूर्ण है।

जल जीवन के लिए जरूरी है लेकिन दुर्भाग्य कि बात है कि संसार के कई हिस्सों में लोगों को सेहतमंद रहने के लिए जितना पानी जरूरी है वह उन्हें मिल नहीं पाता। राजस्थान, जैसलमेर और अन्य रेगिस्तानी इलाकों में पानी आदमी की जान से भी ज्यादा कीमती है। पीने का पानी इन इलाकों में बड़ी कठिनाई से मिलता है। बहुत बार लोगों को पानी के लिए मीलों चलना पड़ता है और तब भी उन्हें जो पानी मिलता है उसकी तुलना किसी अमृत से कम नहीं होती।

मनुष्य के शरीर में यदि पानी की कमी हो जाए तो उसको बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। परन्तु विडंबना देखिए हम मनुष्य ने अपने इस जीवनदायी अमृत को दूषित करना प्रांरभ कर दिया है। प्राकृतिक संसाधनों को दूषित न होने दें और पानी को व्यर्थ न गँवाएँ यह प्रण लेना आज के वर्तमान समय में बहुत आवश्यक है। पानी हमारे जीवन की पहली प्राथमिकता है, इसके बिना तो जीवन संभव ही नहीं क्या आपने कभी सोचा कि धरती पर पानी जिस तरह से लगातार गंदा हो रहा है और कम हो रहा है, अगर यही क्रम लगातार चलता रहा तो क्या हमारा जीवन सुरक्षित रहेगा? कितनी सारी आपदाओं का सामना करना पड़ेगा और सबकी जिन्दगी खतरे में पड़ जाएगी।

ताज़े पानी के महत्त्व पर ध्यान केन्द्रित करने और ताज़े पानी के संसाधनों का प्रबंधन बनाये रखने के लिए राष्ट्र संघ प्रत्येक वर्ष 22 मार्च का दिन अंतर्राष्ट्रीय जल दिवस के रूप में मनाता है। जल संरक्षण से ही हम पानी की कमी को कम कर सकते हैं। जल संरक्षण अपने पीने के पानी की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करता है। सफाई, निर्माण एवं कृषि आदि के लिए अवशिष्ट जल का पुनःचक्रण (रिसाइक्लिंग) करना।

इस लिए हमें जल बचाने के लिए स्वयं विचार करना होगा। सब्जी, बरतन आदि धोने के बाद बाल्टी में जमा उस पानी को पौधों में डाल दें, पोंछा लगा

लें, फर्श की धुलाई, कार धोने या टॉयलेट में गिराने के काम ले आएँ। बहते नल को जल्द से जल्द ठीक कराएँ। दाँत आदि साफ करते वक्त जरूरत पड़ने पर ही नल चलाना चाहिए। अपने पालतू जानवरों को गार्डन में नहलाएँ, ताकि पानी घास व पौधों को मिल सके। धरती में गड्ढ़े आदि खोदकर उसमें वर्षा का जल जमा करें। इस प्रकार हम कह सकते हैं जल है तो कल है।

'मन के हारे हार है मन के जीते जीत'

किसी विद्वान ने क्या खूब कहा है- "मन के हारे हार मन के जीते जीत है" इस वाक्य का यदि आप गहराई से अवलोकन करें तो इस वाक्य की सार्थकता का पता चलता है कि मन कितना शक्तिशाली है जो किसी को भी पराजित या विजयी कर सकता है। और ये वास्तविकता भी है कि हमारा मन ऐसा कर सकता है क्योंकि हमारे शास्त्रों में मन को ही बंधन और मन को ही मुक्ति का कारण माना गया है। शुद्ध, शांत, निर्मल और स्थिर मन मनुष्य को उत्कर्ष की ओर ले जाता है वही पर चंचल, अस्थिर कुलषित एवं कुसंस्कारों से भरा हुआ मन मनुष्य को पतन व पराभव के मार्ग पर धकेलता है।

मनुष्य का जीवन परिवर्तनशील है जिस प्रकार मौसम में बदलाव देखने को मिलते हैं ठीक उसी प्रकार मानव-जीवन में निराशा-अवसाद, लाभ-हानि, सफलता-असफलता आते और जाते रहते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि मानव-जीवन में कुछ भी स्थिर नहीं रहता। कभी तो काले घटाओं के बादल घिर आते हैं और मनुष्य अवसाद ग्रस्त हो जाता है परंतु थोड़े ही समय के पश्चात सुखों की बारिश के रूप में मनमोहक इन्द्रधनुष भी मानव-जीवन में आता है जीवन के इन्हीं कड़वे-मीठे अनुभवों से गुजरने का नाम जीवन है। इसलिए जीवन को जीने के लिए मानव को सकारात्मक सोच को अपनाना होगा। जहाँ अच्छा वक्त हमें खुशी देता है, वहीं बुरा वक्त हमें आने वाले भविष्य के लिए सक्षम बनाता है। कुछ लोग अपनी पहली ही असफलता पर हार मान लेते हैं और निराशा के अंधकार में खो जाते हैं। अब्राहम लिंकन के बारे में

कौन नहीं जानता उम्र के 52 वर्ष में वे अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गए। क्या वे चुनाव हारने के बाद निराश नहीं हुए होंगे? क्या उन्हें अवसाद या निराशा न घेरा होगा? जरुर उन्होंने ने भी इन सब का सामना किया होगा परंतु हिम्मत, सहनशीलता और आत्मविश्वास के कारण ही अंत में वे सफल हुए।

मनुष्य ने जिस क्षण स्वयं को कमज़ोर, लाचार और निर्बल महसूस करना शुरू कर दिया समझो उसी क्षण उसकी हार निश्चित हो जाती है। मानव को दो विकल्पों के बीच सदैव चुनाव करना पड़ता है और यह उसका मानसिक स्तर, उसका विवेक है कि वह क्या चुनता है। मानसिक रूप से सबल और सचेत व्यक्ति सदैव आगे बढ़ने की बात करता है उसके लिए भाग्य जैसी बातें सिर्फ शब्द होते है उसे अपने पुरुषार्थ पर विश्वास होता है। वह निराशा में भी आशा की किरण खोज लेते है उनके लिए हर वक़्त शुरुआत का वक़्त होता है।

यदि भाषा न होती .....

यदि भाषा न होती तो इतना सभ्य समाज, वैज्ञानिक संशोधन, विकास संभव नहीं था। भाषा न होती तो विचारों का आदानप्रदान न होता। भाषा हमारे विचारों के संप्रेषण का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। भाषा के द्वारा ही हम किसी दूसरे व्यक्ति के भावों, विचारों के साथ-साथ उसके व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त करते हैं।

मनुष्य जीवन में भाषा का बहुत ही महत्त्व है। समाज में अपने विचारों का आदान-प्रदान करने से लेकर किसी विशेष क्षेत्र में सफलता पाने के लिए अच्छी भाषा की बड़ी भूमिका होती है।

मनुष्य को सभ्य व पूर्ण बनाने के लिए शिक्षा जरूरी है और सभी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिए भाषा की आवश्कता है। भाषा के बिना मनुष्य को शिक्षा देना संभव नही था।

भाषा के बिना समाज का विकास नहीं होता। संस्कृति और सभ्यता का विकास नहीं होता। साहित्य, वाणिज्य, विज्ञान, सभ्यता आदि सभी क्षेत्रों में

भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान बाँटना, वैज्ञानिक संशोधन करना, साहित्यिक रचना करना आदि द्वारा सामाजिक विकास में सहभागी बनने के लिए भी सही भाषा की आवश्यकता है।